International Journal of Multidisciplinary Trends

E-ISSN: 2709-9369
P-ISSN: 2709-9350
www.multisubjectjournal.com
IJMT 2025; 7(1): 110-112
Received: 12-11-2024
Accepted: 17-12-2024

विष्णु कुमार शर्मा
शोधार्थी, लोक प्रशासन विभाग,
जय नारायण व्यास विश्वविद्यायल,
जोधपुर, राजस्थान, भारत

Corresponding Author:
विष्णु कुमार शर्मा
शोधार्थी, लोक प्रशासन विभाग,
जय नारायण व्यास विश्वविद्यायल,
जोधपुर, राजस्थान, भारत

डिजिटल युग में महिला सशक्तिकरणः अवसर और चुनौती

विष्णु कुमार शर्मा

सारांश
डिजिटल युग में महिलाओं को शिक्षा, रोजगार, स्वास्थ्य और सामाजिक उत्थान के नए अवसर प्रदान किए हैं। इस शोध पत्र में डिजिटल साधनों जैसे इंटरनेट, सोशल मीडिया और ई–कॉमर्स प्लेटफार्म के माध्यम से महिलाओं के सशक्तिकरण की प्रक्रिया पर चर्चा की गई है। साथ ही डिजिटल डिवाइडर, साइबर सुरक्षा और सांस्कृतिक बाधाओ जैसे चुनौतियों का भी विश्लेषण किया गया है। यह अध्ययन यह बताता है कि कैसे तकनीकी महिलाओं को आत्मनिर्भर और सशक्त बना सकती है और समाज में लैंगिक समानता को बढ़ावा दे सकती है। महिलाएं अब घर बैठे ही स्थानीय और राष्ट्रीय, अंतरराष्ट्रीय सूचनाओं को इंटरनेट के माध्यम से प्राप्त कर सकती है। महिला शिक्षा के माध्यम से उन्हें प्रौद्योगिकी का उपयोग करने में सक्षम बनाने के अलावा आर्थिक रूप से स्वतंत्र भी बनाया है।

कुटशब्दः डिजिटल युग, महिला सशक्तिकरण, शिक्षा, रोजगार, स्वास्थ्य, सामाजिक

प्रस्तावना
वर्ष 1990 में वैश्वीकरण के दौर में प्रौद्योगिकी एक पुरुष प्रभुत्व वाला पेशा था लेकिन जैसे–जैसे महिलाएं शिक्षित होती गई वैसे–वैसे वे प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भी आगे आने लगी। अब वे डिजिटल तकनीक का इस्तेमाल करके जानकारी हासिल करने में उसे समझने और उसका इस्तेमाल करने में सक्षम हो गई हैं। डिजिटल क्रांति के वादों के परिणाम स्वरुप भारत में अधिकांश महिलाएं इंटरनेट तक पहुंच नहीं पाई हैं। महिलाओं का सशक्तिकरण सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक बाधाओ के युग में डिजिटलीकरण उन्हें मजबूत करने हेतु व बेहतर तरीके से निर्णय लेने में शामिल होने की उनकी क्षमता का निर्माण करने में मदद करता है। तकनीकी प्रगति के इस युग में डिजिटल साधन महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए एक मजबूत माध्यम बनकर उभरे हैं। भारत जैसे विकासशील देशों में जहां लैंगिक असमानता एक बड़ी समस्या हैए डिजिटल उपकरण एवं सेवाएं महिलाओं को उनकी क्षमता का एहसास करने में उनकी मदद कर रहा है। इस शोध का उद्देश्य डिजिटल युग में महिलाओं के जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना और उनके सशक्तिकरण के लिए उपयुक्त समाधान प्रदान करना है।

महिला सशक्तिकरण हेतु डिजिटलीकरण की आवश्यकता
दुनिया की आबादी में महिलाओं के हिस्सेदारी करीब आधी है। घर के कामों से लेकर समाज के दूसरे अहम मामलों को संभालने तक महिलाएं किसी में भी पीछे नहीं है। हालांकि ऐतिहासिक रूप से उन्हें समाज में दोयम दर्जे का दर्जा मिला है, जिससे आर्थिक भागीदारी के कम अवसर, संसाधनों तक सीमित पहुंच व राजनीतिक प्रतिनिधित्व कम है। इस असमानता या भेदभाव को कम करने हेतु डिजिटल शिक्षा के माध्यम से महिला सशक्तिकरण की आवश्यकता है। डिजिटल शिक्षा की आवश्यकता सिर्फ शहरों में ही नहीं अपितु ग्रामीण क्षेत्रों में भी आवश्यक है। आज शहरी महिलाएं इंटरनेट, स्मार्टफोन और डिजिटल उपकरणों का प्रयोग करने लगी है। किंतु ग्रामीण महिलाएं आज भी डिजिटल शिक्षा से वंचित है। आज सरकार द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों में डिजिटल इंडिया, इंटरनेट साथी जैसे कार्यक्रम चलाकर वहां की महिलाओं को जागरुक कर रही है ताकि ग्रामीण महिलाएं भी इस डिजिटल युग का हिस्सा बन सके। इंटरनेट तक महिलाओं की पहुंच में सुधार से पूरे देश को फायदा होगा। डिजिटल प्रौद्योगिकी द्वारा महिलाएं शिक्षा में, स्वास्थ्य सेवाओं में और आर्थिक क्षेत्र में अपने लिए नए अवसर खोज सकती हैं। जो समाज में लैंगिक असमानता को कम करने में मदद करती है।

डिजिटल युग में महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र
डिजिटल युग जिसे तकनीकी युग भी कहा जाता है, ने समाज में व्यापक बदलाव किए हैं। इस युग में महिलाओं को सशक्त बनाने हेतु कई नए अवसर और साधन प्रदान किए हैं। प्रौद्योगिकी और इंटरनेट के विस्तार ने महिलाओं को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक करने, आर्थिक रूप से स्वतंत्र बनाने और सामाजिक बाधाओं को तोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है जैसे–

(1) आर्थिक क्षेत्र में

सतत् विकास हेतु महिलाओं का आर्थिक रूप से सशक्त होना जरूरी है। विश्व कल्याण हेतु चलाए गए सहस्राबादी विकास लक्ष्यों (MDGs) में एक लक्ष्य यह सुनिश्चित करना था कि वित्तीय संपत्तियों पर महिलाओं का अधिकार हो। इस हेतु देशों को महिलाओं को समान दर्जा देने, आर्थिक संसाधनों पर उनके अधिकार, साथ ही राष्ट्रीय कानूनों के अनुसार भूमि और संपत्ति के अन्य रूपों, वित्तीय सेवाओं, विरासत और प्राकृतिक संसाधनों पर स्वामित्व और नियंत्रण तक पहुंच हेतु सुधार करने होंगे। महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण का अर्थ है कि महिलाओं के लिए रोजगार के अवसरों को बढ़ाना व संसाधनों तक पहुंच प्रदान करना जिससे उन्हें निर्णय लेने की क्षमता व आत्मविश्वास जागृत होता है। महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने से वे अपने परिवार, समुदाय व समाज को लाभान्वित करती है। उनकी आय, जीवन स्तर व आर्थिक स्वतंत्रता में सुधार होता है। आज ई–कॉमर्स प्लेटफार्म और सोशल मीडिया ने महिलाओं के लिए उद्यमिता के द्वार खोले हैं। महिलाएं अब इंटरनेट के माध्यम से अपने व्यवसाय को ऑनलाइन चला कर आर्थिक स्वतंत्रता प्राप्त करती हैं। डिजिटली भुगतान कर और नेट बैंकिंग सेवाओं के जरिए हुए वित्तीय लेन–देन में भी आत्मनिर्भर हो गई है। ई–कॉमर्स प्लेटफार्म जैसे ।ब्रंवद और थ्सपचांतक पर महिलाएं अपने उत्पाद बेचकर आत्मनिर्भर हो रही है।

(2) शिक्षा और कौशल विकास के क्षेत्र में

शिक्षा और कौशल विकास के जरिए महिलाओं को सशक्त बनाने से उनका आर्थिक और सामाजिक विकास होता है। शिक्षित व कुशल महिलाएं अपने परिवार व समुदाय में अहम भूमिका निभाती हैं। वे रोल मॉडल बनाकर दूसरों को भी शिक्षा और प्रशिक्षण पाने हेतु प्रेरित करती है। शिक्षा महिला सशक्तिकरण हेतु प्रथम व मूलभूत साधन है। डिजिटल शिक्षा के माध्यम से महिलाओं में आत्मविश्वास का संचार हुआ है, उनके व्यक्तित्व में निखार आया है। शहरी व ग्रामीण क्षेत्रों में महिला शिक्षा पर निवेश महिला सशक्तिकरण को बढ़ाने का सबसे प्रभावी तरीका है। भारत जैसे विकासशील देश में पुरुषों की तुलना में महिलाओं में डिजिटल साक्षरता दर कम है। यदि महिलाओं को डिजिटल शिक्षा का ज्ञान दिया जाए तो अर्थव्यवस्था में काफी सुधार होगा। यदि बात कौशल विकास की की जाए तो कौशल विकास से तात्पर्य केवल महिलाओं को रोजगार प्रदान करना नहीं अपितु उनके द्वारा किए गए कार्यों में गुणात्मक सुधार कर कार्य प्रदर्शन को बेहतर तथा उत्पादक बनाना है। इसके द्वारा महिलाओं में आत्मविश्वास और आत्मनिर्भरता जैसे गुणों का संचार होगा। कौशल विकास में महिला सशक्तिकरण की दशा और दिशा में सकारात्मक परिवर्तन किया है। डिजिटल युगों में महिलाओं के लिए शिक्षा को अधिक सुलभ व किफायती बनाया है। कई ऑनलाइन प्लेटफॉर्म जैसे कोर्सेज, यू–ट्यूब और सरकारी लर्निंग पोर्टल्स, महिला सशक्तिकरण की राह में मील का पत्थर साबित हुए हैं।

(3) सामाजिक जागरूकता व नेटवर्किंग

आज का यूग सोशल मीडिया का युग है। जिनकी मौजुदगी और सक्रिय भागीदारी ने महिला सशक्तिकरण की विचारधारा को तेजी से और व्यापक रूप में फैलाया है। सोशल मीडिया सामाजिक परिवर्तन का एक ऐसा माध्यम बन गया है जिसने महिला सशक्तिकरण में विभिन्न पहलुओं जैसे कि वैश्विक समुदाय का ध्यान महिला अधिकारी की ओर आकर्षित करने व दुनिया भर में भेदभाव वह रूढ़ीवादिता को चुनौती देने में मदद की है। इसने ब्लॉग, चैट, ऑनलाइन, अभियान, ऑनलाइन चर्चा मंचों और ऑनलाइन समुदाय के माध्यम से महिलाओं के मुद्दों और चुनौतियों पर चर्चा करने हेतु एक विशाल मंच दिया है। जिससे महिलाओं को अपने आत्म–मूल्य का एहसास हुआ, उपलब्धियां हासिल करने में आसानी, अपनी पसंद का चुनाव करना और अपने क्षेत्र में सफल रुचि के साथ अन्य लोगों को प्रेरित करने में सक्षम बनाया है।

(4) स्वास्थ्य और कल्याण के क्षेत्र में

स्वास्थ्य और कल्याण को बढ़ावा देना महिला सशक्तिकरण हेतु भी अनिवार्य है। जब महिलाएं शिक्षा व स्वास्थ्य सेवा से संपर्क दी है तो वे अपने और अपने परिवार की प्राथमिकताओं को और भी बेहतर रख सकती है। वे इंटरनेट का उपयोग कर जन्म स्वास्थ्य, मातृ स्वास्थ्य व समग्र कल्याण को बढ़ावा देने वाली जानकारियों, सेवाओं व पहलों से जागरूक हो सकती हैं। टेली मेडिसिन सेवाओं और स्वास्थ्य ऐप्स ने महिलाओं के स्वास्थ्य देखभाल में क्रांति ला दी है। अब वह अपने और अपने परिवार के स्वास्थ्य के बारे में जागरूक रहती हैं। मासिक धर्म व प्रजनन स्वास्थ्य पर भी आज जागरूकता बढ़ी है।

(5) सुरक्षा और साइबर जागरूकता के क्षेत्र में

आज यहां डिजिटलीकरण ने महिला सशक्तिकरण में अहम भूमिका निभाई है वहीं इसके कई नकारात्मक पहलू भी हैं जो महिलाओं के लिए असुरक्षित हैं। जिनकी वजह से महिलाएं खुद को सोशल साइट्स पर असुरक्षित महसूस करती हैं। इसलिए महिलाओं को साइबर क्राइम और सोशल साइट्स से संबंधित सुरक्षा जानकारी होना आवश्यक है। महिलाओं को इन जानकारियों से अवगत कराने हेतु भारत सरकार द्वारा सुरक्षा ऐप्स और साइबर सुरक्षा कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं। जिनके माध्यम से महिलाओं को ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों जगह सुरक्षित रहने का प्रशिक्षण दिया जा रहा है। यही नहीं आज हमारी साइबर सुरक्षा एजेंसियों में भी कई महिला अधिकारी कार्य कर रही हैं।

चुनौतियां

डिजिटल युग में यहां महिलाओं के लिए नए अवसर खुले हैं वहीं कुछ चुनौतियां भी उनके समक्ष आई है जिनमें से कुछ प्रमुख हैं

1. ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाएं व कम आय वाले परिवार की महिलाएं डिजिटल उपकरण व तकनीक का प्रशिक्षण लेने में असमर्थ होती है।
2. शहरी व ग्रामीण महिलाओं के मध्य एक बहुत बड़ा अंतर है जिसे डिजिटल डिवाइड कहा जाता है। शहरी महिलाएं जहां आज के डिजिटल युग से जुड़ रही है वहीं ग्रामीण महिलाएं आज भी डिजिटल शिक्षा से दूर है।
3. सोशल मीडिया और अन्य डिजिटल मंचों द्वारा महिलाओं के साथ साइबर बुलिंग, ट्रॉनिंग और धोखाधड़ी की जा रही है। उनका ऑनलाइन शोषण किया जा रहा है।
4. समाज में मौजूद पितृसत्तात्मक सोच ने महिलाओं को डिजिटल रूप में स्वतंत्र होने नहीं दिया है।
5. महिलाओं के पास डिजिटल उपकरणों व इंटरनेट सेवाओं का खर्च उठाने हेतु पर्याप्त आर्थिक सहायता मौजूद नहीं है। जिसका प्रमुख कारण वेतन कम मिलना व रोजगार के सीमित अवसर है।
6. महिलाओं के तकनीकी क्षेत्र में प्रशिक्षण देने हेतु चलाई जाने वाले कार्यक्रमों का अभाव।
7. डिजिटल प्लेटफॉर्म पर अधिकांश जानकारियां अंग्रेजी भाषा में होने के कारण भी महिलाएं डिजिटल उपकरणों का इस्तेमाल काम करती हैं।

सुझाव

1. महिलाओं के लिए विशेष डिजिटल कार्यक्रम जैसे इंटरनेट साथी कार्यक्रम (2015), डिजिटल सखी कार्यक्रम (2017), राजस्थान की ए–सखी योजना (2018) आदि कार्यक्रम लाये जाएं जो महिलाओं को डिजिटल युग से जोड़ने का कार्य करें।
2. साइबर सुरक्षा को मजबूत करने और महिलाओं से जुड़े खतरों को कम करने हेतु और प्रयास किए जाएं।
3. महिला और पुरुष में असमानता को कम करने के लिए जी–20 के नियमों की पालना की जाए।
4. ग्रामीण इलाको व महिलाओं तक इंटरनेट की पहुंच सुनिश्चित करना।
5. सरकार द्वारा चलाए जा रहे कार्यक्रमों के प्रति उन्हें जागरूक करना।

निष्कर्ष

डिजिटल युग ने महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए असीम संभावनाएं प्रदान की है। हालांकि इस क्षेत्र में और अधिक प्रयासों की आवश्यकता है ताकि हर महिला डिजिटल साधनों का लाभ उठा सके। डिजिटल युग का सही उपभोग कर महिलाएं न केवल अपने जीवन को बेहतर बना सकती है बल्कि समाज में सकारात्मक बदलाव भी ला सकती है। इसके लिए सभी को मिलकर काम करने की आवश्यकता है, प्रौद्योगिकी से संबंधित कार्यक्रमों का प्रचार अधिक हो और सरकार द्वारा नई–नई योजनाएं बनाकर महिलाओं को उनके प्रति जागरूक करना होगा। डिजिटल कारण को बढ़ावा देकर महिलाओं को सशक्त बनाया जा सकता है।

संदर्भ सूची

1. कुशवाहा, डॉ. शिव बिहारी (2023): महिला सशक्तिकरण पर डिजिटलीकरण का प्रभाव (रीवा जिले के विशेष संदर्भ में) शोध पत्र।
2. स्माईल फाउण्डेशन, ब्लॉग (2023), महिला सशक्तिकरण को डिजिटल सशक्तिकरण की आवश्यकता है।
3. मुखर्जी, डॉ. प्रदीप कुमार (2020) डिजिटल साक्षरता से सशक्त होती ग्रामीण महिलाएं, Article कुरूक्षेत्र।
4. गर्ग विजय (2024), डिजिटल युग में स्त्री सशक्तिकरण आर्टिकल, रविवार दिल्ली।
5. NCERT (2024) नारी शक्ति वंदन, महिलाओं का आर्थिक सशक्तिकरण।
6. सिंह, डॉ. राम समुझ (2018): महिला सशक्तिकरण में शिक्षा की भूमिका : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन, शोध पत्र।
7. चन्द्रा, डॉ. तुलिका (2018): कौशल विकास और महिला सशक्तिकरण, शोध पत्र।
8. कुमारी, मधु (2024): सोशल मीडिया और महिला सशक्तिकरण, शोध पत्र।